अनुराधा जैन
anuradha.jain@azimpremjifoundation.org

प्राथमिक कक्षाओं मे भाषा शिक्षण एवं अध्यापक की भूमिका: अनुभव का सफरनामा

सार

यह पर्चा बच्चो के साथ अन्त:क्रिया में प्राप्त अनुभवों का विश्लेषण है। अलग जगह पर और अलग-अलग तरह के बच्चों के साथ हुए अनुभव यही दिखाते है कि भाषा सीखने में सवांद के महती भूमिका है। इस सवांद के आधार पर शिक्षक को चितंन- मनन कर उसके आधार पर कुछ लचीले क्रम में प्रक्रियायों का संचालन करना सीखने को प्रखर बनाएगा। इसमें कुछ गतिविधियों के व आंकलन के ढंग के संदर्भ में भी कुछ सुझाव दिए गए हैं, जो शिक्षकों के लिए उपयोगी हो सकते हैं।

बच्चों के साथ काम करते समय कई तरह के उदाहरण सामने आते है। ये उदाहरण शिक्षक को आत्म-अवलोकन एवं चिंतन के अवसर प्रदान करते हैं। जिसके माध्यम से अध्यापक सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओ मे अपनी भूमिका तय कर पाता है। कुछ उदाहरण है-

शिवा टीचर-

कई दिनों तक नौ साल के नन्हे अरमान को चित्र बनाते हुए नए शब्द लिखते हुए देख रही थी। मुझसे रोज दो कागज ले जाता था। एक दिन मैंने पूछ ही लिया, क्या बात है, अरमान आजकल तो तुम रोज नए-नए शब्द लिखकर उनके चित्र बनाकर लाते हो। तुम इतना सब कैसे सीख रहे हो? अरमान ने कहा - शिवा मेरा पक्का दोस्त है, हम दोनों एक-सा चित्र बनाते है, फिर उनके नाम लिखते हैं। आपकी तरह वह भी मुझे पढना लिखना सिखाता है। क्या वह भी मेरा टीचर है? मैंने, कहा हो सकता है, अगर तुमको लगता है तो, शिवा और अरमान कक्षा तीसरी मे पढ़ते हैं। अरमान के लिए शिवा उसका पक्का दोस्त भी हैं, और शिवा टीचर भी है। इस तरह की दोस्ती कई और बच्चों में भी दिखी।

बच्चों की सरकार-

कक्षा तीसरी में बच्चों से चर्चा के दौरान, बच्चों से एक पेचीदा सवाल पूछा गया- कि यदि बच्चों की सरकार बने और आप उसमें रहें तो आप क्या काम करवाओगे, कई तरह के जबाब बच्चों ने दिए, गरीब बच्चों के लिए स्कूल खुलवाना, बच्चों को उनके अधिकार दिलवाना, देश से कालाधन खत्म करना, इत्यादि। धनेषा ने जबाब दिया कि वह स्कूल मे डिज़ाईन बनवाएगी, जिनमे कविताएँ हो, सुन्दर चित्र हो। क्यूँकि सुन्दर स्कूल अच्छा लगता हैं। चित्र हम देख सकते हैं, कविताएँ हम पढ़ सकते है।

मानसी की चित्रों की दुनिया:

कक्षा तीसरी की मानसी की दुनिया बड़ी रंगबिरंगी है। वह कई चित्र बनाती है एवं शादी के कार्ड, मोती, आदि चीजों को बड़े सलीके से संयोजित करती है। उसने अख़बारो के चित्र काटकर, चीजों के चित्र बनाकर लेबिलिंग के माध्यम से भाषा के साथ अपना रिश्ता कायम किया।

1. बच्चों के सीखने मे शिक्षक की भूमिका

तीनों उदाहरण तीन बच्चों के सीखने के अलग-अलग तरीकों को परिलक्षित करते है। पहला उदाहरण इस ओर इशारा करता है, कि बच्चे अपने दोस्तों की मद्द से सीखने का रास्ता आसान बना लेतें हैं। दूसरे उदाहरण में बच्ची विद्यालय को संवाद विहिन सख्त अनुशासन मे बँधे केवल भवन के रूप मे नही देखती वरन् वह भौतिक संवाद के अवसर तलाश रही है। तीसरे उदाहरण में बच्ची अपनी ही दुनिया मे मग्न रहकर अपने तरीके से सीख रही

है। इन उदाहरणों से एक बात स्पष्ट है, कि बच्चे सीखने के रास्ते खुद ही तलाश लेते हैं। इन प्रक्रियाओं मे शिक्षक एक उत्प्रेरक की तरह कार्य करते हैं, जो बच्चों के अनुभवों को समृद्ध बनातें हैं एवं समझ के स्तरों को विकसित करने मे मदद करते हैं। इस प्रकार के उदाहरण शिक्षक के समक्ष तभी आ सकतें हैं, जब वह बच्चों को स्वच्छंद रूप से अपनी बात रखने के अवसर दें, बच्चों और शिक्षक के बीच एक दोस्ताना रिश्ता हो, बच्चों के बीच शिक्षक की सकारात्मक छवि हो और जो बच्चों के बालमन को समझने के लिए तत्पर हो। संभवतः इसके लिए शिक्षकों को बच्चों की आपसी दोस्ती एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति को खुलेपन और संयम के साथ कक्षा मे स्थान देना चाहिए। जिससे प्रक्रियाओं को प्रभावी तौर पर सुनिश्चत किया जा सके। इन आधारों पर यदि भाषा-शिक्षण के कार्य को प्रक्रिया के रूप मे डालकर देखा जाए तो इस प्रकार के कुछ चरण सामने आते है-

2. बच्चों के भाषा सीखने की प्रक्रिया में चरण

अ. संवाद को सहज एवं प्रभावी प्रक्रिया के तौर पर अपनाना- बच्चा परिवेश से सीखता है, यह एक प्रतिस्थापित तथ्य है। परिवेश मे कई समाजिक समीकरण काम करते हैं। शिक्षा में सिर्फ़ विषयों के शिक्षण की बात नही की गई, बल्कि इसमे चिंतनशील संवेदी नागरिक बनाने पर भी जोर दिया गया है। समाज मे लोकतांत्रिक मूल्यों के विरोधाभास भी मौजूद हैं, जिनकी उसके समाज मे गहरी पैठ है जैसे जातिगत भेदभाव का मसला, इत्यादि। बच्चे भी इन्ही मान्यताओं के साथ विद्यालय आते हैं। शिक्षक संवाद के माध्यम से जान पाता है कि किस तरह के विचार उसे प्रेरित करते हैं। उन प्रेरित विचारों पर सवाल खड़े करना एवं स्वयं तर्क निर्माण करते हुए निर्णय ले पाने की क्षमता का विकास बच्चों मे संवाद के माध्यम से शिक्षक कर पाता है। यह संवाद की परिपाटी सिर्फ शिक्षक और बच्चों तक सीमित नही है। इसमे बच्चों के आपस के संवाद भी शामिल हैं। उनकी दोस्ती एवं दोस्तों से सीखना भी शामिल है। दोस्तों से बातचीत करना भी एक तरह का समाजीकरण है। जो बच्चे के सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा है। सामाजिक वार्तालाप (इंटरेक्शन) से सीखने की प्रक्रिया का उल्लेख वायगोस्तकी द्वारा दिए गए सीखने के सिद्धांतो मे भी मिलता हैं। जिसकी झलक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 मे भी दिखती हैं। संवाद की संस्कृति कक्षा-कक्ष में पाठ्यचर्या तक सीमित ना हो बल्कि अनौपचारिक तौर पर भी संवाद हो ताकि बच्चों के बारे मे जानकारियॉ मिल सकें।

ब. संवाद के बिंदुओ पर अवलोकन एवं चिंतन- बच्चों के साथ हो रहे संवाद का सिर्फ होकर गुज़र जाना काफ़ी नही होता। शिक्षक का डायरी मे उनको दर्ज करना, उनका अवलोकन करना एवं उन पर गंभीरता से विचार करना भी प्रक्रिया का जरूरी हिस्सा है। ताकि विचारों को एक दिशा में पिरोकर देखा जा सके। उदाहरण के लिए कक्षा तीन मे शुभम् के पिताजी की स्टेशनरी की दुकान है, इसी प्रकार सानिया के पापा की मिठाईयों की दुकान है, दिव्यांश के मम्मी एंव पापा छपाई का काम करते है। इन सारी बातों को क्या विषय से जोड़ा जा सकता हैं। किन तरीकों से इन जानकारियों को शामिल किया जाना है? विषय की अपेक्षित दक्षताओं को हासिल करने मे बच्चें की सार्मथ्यताओं का प्रयोग कैसे किया जा सकता है? निरंतर चिंतन एवं आत्म-अवलोकन से प्रक्रियाओं पर विचार करके उन्हे ज्यादा प्रभावी बनाया जा सकता है।

स. सीखने की प्रक्रियाओ का निर्धारण एवं क्रियान्वयन- भाषा में ध्वनियों के अमूर्त पैटन की खास व्यवस्था है। जिसका अपना महत्व होता है। परन्तु भाषा सीखने के लिए भाषा के साथ बच्चों का जुड़ाव भी होना चाहिए। भाषा के साथ जुड़ाव तभी होगा, जब विषय-वस्तु बच्चों के अनुकूल हो एवं भाषा की समझ विकसित करने के तरीके सहज एवं प्राकृतिक हों।

प्रक्रियाओं मे संवाद एवं अवलोकन से निकाली गयी बातों को भी शामिल करके बच्चों को भाषा से जोड़ा जा सकता हैं। प्रक्रियाओं के क्रियान्वयन से पूर्व एक खाका हो, जिसमें कुछ स्पष्ट उद्देश्य हो, कार्यविधियाँ हों जो बच्चों के अनुकूल हों और मोटे तौर पर यह भी शामिल हो कि हम किन अपेक्षित दक्षताओं को विकसित करने के लिए प्रक्रियाएँ अपना रहें हैं। जिसके आधार पर कार्ययोजना बनायी जा सके, जिसमे लचीलापन भी हो। कार्यविधियों मे बच्चों की रूचियों जैसे चित्र बनाना, अभिनय करना, लेखन अपनी स्वयं की किताब बनाना, आदि को अवधारणाओं के निर्माण करने मे शामिल किया जा सकता है। प्रक्रियाओं के क्रियान्वयन से पूर्व यह सुनिश्चित करना बेहतर होता है, कि उस विद्यालय मे बच्चों के साथ कौन-सी गतिविधि करवाना उचित होगा। उदाहरण के तौर पर साँगानेर के बच्चों को रंगाई-छपाई की अच्छी जानकारी है, समृद्धि बाजार है, आस-पास कई मंदिर व कुछ मदरसे है। साँगानेर के बच्चों के लिए, दुकान के सामानों की सूची बनवाना, आस-पास कौन-कौन सी दुकाने है, उनके नाम लिखवाना, किस प्रकार के त्यौहार, डिग्गी यात्रा आदि को शामिल किया जा सकता हैं। कुछ और भी गतिविधियाँ की जा सकती हैं जैसे- मिड-डे मील के अनुभवों, घर के अनुभवों को शामिल करना, सामान्य चर्चाओं की बातों का ब्लैकबोंड पर लिखना, ताकि बच्चे मौखिक भाषा को लिखित भाषा के रूप में सार्थकता के साथ ग्रहण कर सकें।

3. **भाषा शिक्षण के तरीको का निर्धारण-** सीखने के तरीकों का चुनाव ऐसे होना चाहिए कि बच्चों का उत्साह बना रहे। काम की शुरूवात कहानियों, बालगीत एवं सामान्य विषयों पर चर्चा से की जा सकती है। कृष्ण कुमार जी की पुस्तक 'बच्चे की भाषा और शिक्षक' मे सुझाया गया है कि किस प्रकार की कहानियों पर बच्चों के साथ काम किया जाना चाहिए। बच्चों की रूचियों को समझना जैसे अक्सर बच्चों को चित्र बनाने मे खासी रूचि होती है और वह चित्रों के माध्यम से अर्थ निर्माण का प्रयास भी करते हैं। उनकी इस रूचि को समझते हुए उनको भाषा से जोडने का प्रयास किया जाए तो परिणाम बेहतर हो सकते हैं। जैसे कि बनाए चित्रों की व्याख्या, अपने पंसदीदा खेल के बारे मे लिखना, चित्रों को बनाना एंव उनके नाम लिखना। यांत्रिक तरीके से कई बच्चे वर्णमाला नही सीख पाते, बच्चों की मद्द के लिए वर्णमाला के चार टुकड़े ब्लैकबोंड (श्यामपट्ट) के ऊपर चिपकाये जा सकते हैं एवं मात्राओं को भी एक जगह चार्ट के रूप मे चिपकाया जा सकता है, इस तरीके का संदर्भ भी कृष्ण कुमार जी की पुस्तक 'बच्चे की भाषा और शिक्षक' में हैं। अरमान नौ साल का बच्चा है, कुछ प्रयासों के साथ उसने अक्षर पहचानना एंव सरल शब्दों को लिखना सीख लिया। गृहकार्य मे भी शब्दो एंव वर्णों की पहचान के लिए चित्रों का सहारा लिया।

पुस्तकालय का भी प्रभावी तरीके से प्रयोग किया जा सकता हैं। कक्षा को दो समूहों मे बाँटकर पुस्तकालय की गतिविधि को ठीक तरीके से किया जा सकता है। सरल किताबों को पुस्तकालय की सूची मे शामिल किया जा सकता है। एकलव्य प्रकाशन की किताबें 'अक्कड़-बक्कड़', 'एक दो दस', 'बिल्लीं बोले म्याँऊ' जैसी सरल एंव कम शब्दों वाली कविताओं की किताबें शुरूआती पाठको में सार्थक रूप में पढने की आदत को विकसित करती है। कुछ बच्चों के लिए दिंगतर की भाषा श्रृंखला जैसे 'सफेद हाथी', 'मूँछे हो तो बुद्धुराम जैसी' आदि का प्रयोग किया जा सकता है इसमें NCERT की Barkha का भी उल्लेख किया जा सकता है। किताबों की सीमित संख्या मे आपसी सहयोग से बच्चें किताबो को साझा करके पुस्तकालय का उपयोग कर सकते है।

4. **आंकलन की प्रक्रियाए-** आंकलन सिर्फ औपचारिक लिखित तौर पर ही नही वरन् अनऔपचारिक माध्यमों से भी किया जा सकता है। बच्चों के व्यवहार से भी कई बाते जानी जा सकती है, जैसे जिन बच्चों को लिखना या पढ़ना आ जाता है, वह बार-बार लिखने एवं पढ़ने का अभ्यास करते हुए दिख जाते हैं। अभिभावकों से बात करने से भी पता चलता है कि बच्चा सीख पा रहा है या नहीं। दैनिक रूप से बच्चों के कार्यो का अवलोकन भी आंकलन का हिस्सा हो सकता हैं। गृहकार्य मे क्या कर पा रहा है एवं क्या नही इसमें भी आंकलन मद्द करता है, और फिर उसके लिए आगे की योजना बनाने में भी। अवकाश के दिनों के लिए कुछ कागजों की खाली किताब बना सकतें हैं और बच्चों से कह सकते हैं, कि छुट्टिया के बाद अपनी किताब दिखाना। कुछ बच्चें सिर्फ चित्र बनाते है, कुछ चित्र के साथ लेबलिंग करते हैं, कुछ कविता भी लिख पाते हैं, और कुछ बच्चे अपने अनुभव लिख पाते हैं। इससे एक अनुमान लगाया जा सकता है कि किस बच्चे के साथ कौन-सी दक्षताओं पर कार्य करना हैं।

विमर्श

एक शिक्षक द्वारा शुरूआती दिनो मे औपचारिक तौर पर पढ़ाने के बजाए, बच्चों के साथ एक दोस्ताना माहौल बनाने एवं उनके परिवेशीय परिपेक्ष्यों को समझने के लिए समय दिया जाना चाहिए। बच्चों के साथ, शिक्षक को भी बच्चों के साथ सहज होने का समय दिया जा सकता है, ताकि वह अपने शिक्षण के उद्देश्य एंव प्रक्रियाओ को तय कर सके। सीमाओ मे सहजता के साथ सीखना एंव सिखाना चुनौतीपूर्ण है। कुछ प्रश्न ज़हन मे रह जाते हैं शिक्षक बच्चो के साथ अपनी छवि का निर्माण क्यों करे और कैसे करे? शिक्षक की सकरात्मक छवि बच्चो के सीखने की प्रक्रिया को कैसे सहज बनाती है? कैसे वह अपनी शिक्षण विधियों मे शिक्षा के लक्ष्यों को शामिल कर सके? सीखना और सिखाना, दोनों में से किसको प्राथमिकता दी जानी चाहिए? इन प्रश्नों मे जबाब शिक्षक अपने अनुभव से ही जान पाता है।

सफर के साथी

1. एन.सी.ई.आर.टी.(2005), *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005*, नई दिल्ली
2. एकलव्य एवं दिगन्तर की पुस्तकें
3. मुस्कान संस्था के विडियो

वेब लिंक्स

- http://www.hindibookspdf.com/divaswapna-by-gijubhai-badheka-hindi-book-pdf-download/
- https://archive.org/details/BachcheKiBhashaAurAdhyapak-EkNirdeshika
- http://www.ncert.nic.in/departments/nie/dee/publication/pdf/padhne_ki_samajh.pdf